



न्यायालय मू-प्रबन्ध अधिकारी एवं पदेन राजस्व अपील प्राधिकारी, सीकर ।

अपील संख्या-148/2016

- 1- हरफूल
- 2- महावीर
- 3- श्रीशाराम

पिसरान झाबर जाति जाट निवासी कोलसिया तहसील
नवलगढ़ जिला झुन्डुनू ।

---अपीलान्टस्---

---बनाम---

- 1-रामकोरी पुत्री झाबर स्त्री रामदेव जाति जाट निवासी डूडवा तहसील
लक्ष्मणागढ़ जिला झुन्डुनू ।
- 2-स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर शाखा नवलगढ़ जिला झुन्डुनू जरिये शाखा
प्रबन्धक स्टेट बैंक आफ बीकानेर एण्ड जयपुर शाखा नवलगढ़ जिला झुन्डुनू ।
- 3-राजस्थान सरकार जरिये लैण्ड होल्डर तहसीलदार नवलगढ़ जिला झुन्डुनू ।

---रेस्पोंडेन्टस्---

अपील विरुद्ध निर्णय एवं डिक्ली
दिनांक 14-10-2015 द्वारा उप
खण्ड अधिकारी नवलगढ़ ।

---0---

उपस्थिति-

- 1-श्री शिवनारायणासिंह एडवोकेट- अपीलान्ट
- 2-श्री मुलतान बाकोलिया एडवोकेट- रेस्पोंडेन्ट

निर्णय दिनांक 7.5.2018

संक्षेप में प्रकरणा के तथ्य इस प्रकार है कि वादीया/रेस्पोंडेन्ट सं0-1 ने अदालत मातहत में दावा विभाजन व स्थायी निषेधाज्ञा का पेशा कर निवेदन किया आराजी खतरा नं0 408 रकबा 0.0300 हैक्टर, ख0नं0 409 रकबा 4.8600 हैक्टर, खतरा नम्बर 1426/409 रकबा 0.1000 हैक्टर कुल किता-3 रकबा 4.99 हैक्टर ग्राम कोलसिया तहसील नवलगढ़ वादीनी एवं प्रतिवादी सं0-1 से 3 की पैतृक कब्जे



की सामलाती भूमि है जिसका अभी तक कोई विभाजन नहीं हुआ। खाता सामलाती है। जिसके कारण वादीने अपने हिस्से की आराजी का विकास नहीं कर सकती अतः विधिवत विभाजन का यह दावा पेश किया। वादीनी के पिता झाबर के कुल तीन पुत्र व तीन पुत्रियां हुईं। जिसके कारण पैतृक आराजी में सभी का 1/6, 1/6 हक हिस्सा है। दिनांक 16-11-2010 को झाबर की दो पुत्रियां पतासी व संतोष ने अपने हिस्से की आराजी का हक त्याग प्रतिवादी सं०-1 से 3 के पक्ष में कर दिया इस कारण उन्हें पक्षकार नहीं बनाया गया। अतः दावा स्वीकार कर उक्त आराजी में वादीनी का 1/6 हिस्सा का विधिवत विभाजन किया जाकर वादीनी का खाता अलग किया जावे। अदालत मातहत ने बाद सुनवाई वादीनी का दावा प्राथमिक रूप से डिक्री कर विभाजन प्रस्ताव आने पर बाद सुनवाई अन्तिम डिक्री जारी की। जिससे धुब्ध होकर अपीलान्ट ने यह अपील निम्न आधारों पर प्रस्तुत की है।

योग्य अदालत मातहत का निर्णय खिलाफ कानून एवं पत्रावली है। विवादित आराजी का खातेदान पहले अपीलान्ट का पिता झाबर रहा। विवादित आराजी के अलावा आराजी ख० नं० 670 रकबा 0.65 हैक्टर कोलसिया में स्थित है। झाबर की मृत्यु दिनांक 19-5-1993 को हो गई। इसके बाद इस आराजी के कानून से खातेदार उसके तीन पुत्रों अपीलान्ट्स एवं उसकी बेवा अणाची हुये। इस प्रकार इस आराजी में अपीलान्ट एवं इनकी माता का 1/4, 1/4 हक हिस्सा हुआ जिस पर वे काबिज रहे। रेस्पोंडेंट सं०-1 व संतोष एवं पतासी की आराजी बहुत पहले कर दी थी जो अपने सुत्तराल में रह रही है। जो अपने अपने पत्तियों की आराजी पर काबिज है। अपीलान्ट्स ने रेस्पोंडेंट सं०-1 व अन्य दो बहिनों संतोष व पतासी के भात छुट्ट व अन्य अवसरों पर काफी खर्चा किया था। जाट समाज में प्रचलित अनादिकाल से रिवाज के अनुसार पुत्रियां अपने पिता की जायदाद में कोई हक हिस्सा नहीं रखती इस कारण भी रेस्पोंडेंट सं०-1 व अन्य बहिनों का इस आराजी में कोई हक हिस्सा नहीं है। झाबर के देहान्त के बाद उक्त आराजी का नामान्तरकरण अपीलान्ट्स एवं उनकी माता अणाचीदेवी के नाम तस्दीक किया गया है जिसके बाद ठण्ड राजस्व रेकार्ड भी हमारे नाम से ही रहा है। अपीलान्ट एवं अणाची ने ख० नं० 670 रकबा

0. 65 हैक्टर का बैचान जरिये रजिस्टर्ड विक्रय पत्र रामलाल पुत्र हनुमानाराम जाट को सन् 2002 में बैचान कर दिया। शोध विवादित आराजी की खातेदारी अपीलान्ट एवं अण्णाची के 1/4, 1/4 हिस्से की दर्ज है। जिसको रेस्पोंडेन्ट संख्या-2 के यहां गिरवी रख कर ऋण सुविधा ली है। इससे स्पष्ट है कि रेस्पोंडेन्ट संख्या-1 एवं अन्य दो बहिनो का इस आराजी पर कभी कोई कब्जा नहीं रहा। दिनांक 11-2-2010 को अपीलान्ट की माता का देहान्त हो गया जिसमें 1/4 हिस्से की जमीन में रेस्पोंड सं0-1 व अन्य दो बहिनों का नाम भी नामान्तरकरण में दर्ज हो गया। रेस्पोंड सं0-1 व अन्य दो बहिनों का इस आराजी में 1/24, 1/24 हिस्से का दर्ज किया। पण तथा अपीलान्ट्स के 7/24 हिस्सा दर्ज किया जो गलत दर्ज किया गया। उक्त सम्पूर्ण जमीन पर अपीलान्ट्स काब्ज है उनके नाम दर्ज होनी चाहिये। संतोष एवं पतासी ने अपने हिस्से 1/24, 1/24 का अपने भाईयों के पक्ष में हक त्याग कर दिया। रेस्पोंडेन्ट संख्या-1 के नाम उक्त आराजी में 1/6 हिस्सा गलत रूप से दर्ज किया गया है। रेस्पोंडेन्ट ने उक्त आराजी में अपना 1/6 हिस्सा बताकर केवल खाता विभाजन का दावा पेशा किया जबकि रेस्पोंडेन्ट संख्या-1 का विवादित आराजी में 1/24 हिस्से से अधिक नहीं बनता है। इसके बावजूद अदालत मातहत ने वादीया का दावा स्वीकार करने में कानूनी भूल की है। अपीलान्ट को कैवियट के नोटिस दिनांक 23-5-16 को प्राप्त होने पर प्रारम्भिक निर्णय एवं डिक्ली एंड ऑफिस की जानकारी भी तब हुई जब दावे की आदेशिका की नकले प्राप्त की। जिस पर अपीलान्ट ने जानकारी से यह दोनों अपीले मियाद के अन्दर पेशा की है। वादीया ने 1/6 हिस्से की न तो घोषणा चाही है और न ही उसका 1/6 हिस्सा उक्त आराजी में है। अदालत मातहत ने वादीया का दावा स्वीकार कर 1/6 हिस्से का खाता विभाजन कर आदेश पारित करने में कानूनी भूल की है। अदालत मातहत ने तनकी संख्या-1 का निर्णय गलत पारित किया है। पटवारी हल्का मौके पर गया तथा अपीलान्ट्स मिला और पटवारी हल्का ने बताया कि आप तीनों भाईयों की आराजी का खाता विभाजन कर दिया जावे। इस बात के लिये हम सहमत थे न कि वादीया के साथ खाता विभाजन के लिये वादीया पटवारी हल्का के साथ नहीं आई इस कारण अपीलान्ट्स के पक्ष में कोई भी आदेश नहीं हुआ। अपीलान्ट्स अपना है





पटवारी हल्का ने केवल वादीया से मिलकर अपने पूर्व नियोजित तरीके से फर्द मौका तैयार कर पेश की है। फर्द मौका विधिवत नहीं हुई है। पटवारी हल्का ने केवल खाता विभाजन का प्रस्ताव रेस्पोंडेन्ट संख्या-1 का ही बनाकर पेश किया है जबकि सभी खातेदारों का खाता विभाजन किया जाना चाहिये यह कानून की मंशा है। रेस्पोंडेन्ट संख्या-1 का जिस स्थान पर कब्जा बताया है वह गलत है। इस आराजी पर कहीं भी रेस्पोंडेन्ट का कभी भी कब्जा कायम नहीं रहा है। तथा ना ही आज कोई कब्जा है। विभाजन प्रस्ताव धोके से तैयार किये गये है जिसके आधार पर आदेश पारित किया है वह भी विधि संगत नहीं है। विभाजन प्रस्ताव भी तहसील-दार स्वयं द्वारा तैयार नहीं किया गया है। तथा ना ही विभाजन प्रस्ताव पर कोई आपत्ति ली है। अदालत मातहत का निर्णय विधि विरुद्ध है। अपील स्वीकार कर अदालत मातहत का निर्णय निरस्त किया जावे।

अपील दर्ज रजिस्टर की गई। रेस्पोंडेन्ट को जरिये नोटिस तलब किया गया। अदालत मातहत की पत्रावली मंगाई जाकर शामिल पत्रावली की गई। बहस विद्वान अभिभाषकगण सुनी गई।

विद्वान वकील अपीलान्ट ने बहस में अपील मीमों में दर्ज तथ्यों को दौहराते हुये कथन किया कि विवादित आराजी का खातेदार अपीलान्ट का पिता झाबर था। झाबर के देहान्त के बाद उक्त आराजी का नामान्तरकरण अपीलान्ट एवं उनकी माता अणाची देवी के नाम तस्दीक किया गया। यह नामान्तरकरण मौके की जांच करने के बाद तस्दीक किया था। इस प्रकार उक्त आराजी अपीलान्ट एवं उनकी माता अणाची के 1/4, 1/4 हिस्से में दर्ज रही। अपीलान्ट की माता अणाची का देहान्त होने पर विरासत का नामान्तरकरण तस्दीक किया गया उस समय बिना किसी प्रकार की जांच किये नामान्तरकरण अपीलान्ट्स एवं रेस्पोंडेन्ट सं-0-1 व दो अन्य बहिन पतासी एवं सन्तोष के नाम तस्दीक किया गया जो गलत रूप से तस्दीक किया गया। जबकि यह नामान्तरकरण केवल अणाची के 1/4 हिस्से का भरा जाना था जिसमें 1/24 हिस्सा रेस्पोंडेन्ट का बनता है। किन्तु अदालत मातहत ने यह नामान्तरकरण अपीलान्ट्स एवं तीनों बहिनों के समान रूप से भर



कर तस्दीक कर दिया जो गलत है। पतासी एवं संतोष ने तो अपने 1/24, 1/24 हि० का हिस्सा हक त्याग अपने भाईयों अपीलान्टस् के पक्ष में करवा दिया। जिसके अनुसार उक्त आराजी में अपीलान्टस् का हिस्सा 23/24 हिस्सा हुआ तथा रेस्पोंडेन्ट सं०-1 का 1/24 हिस्सा ही होता है। किन्तु रेस्पोंडेन्ट का इस आराजी पर कभी भी कब्जा नहीं रहा ना ही कब्जा आज है। रेस्पोंडेन्ट ने गलत रूप से अपने आप को इस भूमि में 1/6 हिस्से की खातेदार बताकर केवल खाता विभाजन का दावा गलत रूप से पेश किया है। रेस्पोंडेन्ट ने अपने आपको बिना खातेदार घोषित करवाये ही 1/6 हि० का खाता विभाजन का दावा गलत रूप से पेश किया। जिसे अदालत मातहत ने बिना अपीलान्ट द्वारा पेश किये साक्ष्यों पर गौर किये बिना पारित किया है। अदालत मातहत में रेस्पोंडेन्ट ने दावे में राजीनामा की बात कह रखी थी जिसके भ्रम में अपीलान्ट को रख कर यह आदेश विधि विरुद्ध पारित करवाया है। अदालत मातहत में तनकी संख्या-1 का निर्णय विधि विरुद्ध किया है। रेस्पोंडेन्ट का 1/6 हिस्सा मानकर खाता विभाजन का जो आदेश दिया वह गलत है तथा खाता विभाजन सभी खातेदारों के मध्य किया जाना चाहिये किन्तु अदालत मातहत ने केवल रेस्पोंडेन्ट संख्या-1 का ही खाता विभाजन किया है जो गलत है। कानूनन सभी खातेदारों का खाता विभाजन एक साथ किया जाना चाहिये किन्तु योग्य अदालत मातहत ने केवल रेस्पोंडेन्ट संख्या-1 का ही खाता विभाजन का आदेश विधि के विपरित पारित किया है। रेस्पोंडेन्ट ने खाता विभाजन का दावा तो कर दिया किन्तु इस आराजी पर इसका कोई कब्जा नहीं है कब्जा प्राप्त करने की कोई सहायता नहीं चाही इसके बाद भी अदालत मातहत ने दावा डिक्री कर दिया। पटवारी हक ने भी अपीलान्ट को मुगालते में रखकर रेस्पोंडेन्ट संख्या-1 से साजिश कर मौके के विभाजन प्रस्ताव गलत तैयार किये है तथा अपीलान्ट को यह कहकर बंटवारा प्रस्ताव तैयार कर दिया कि आप तीनों भाईयों की आराजी का बंटवारा कर रहे हैं। तथा अपीलान्ट अनपढ़ व्यक्ति है जिन्होंने पटवारी के साथ रेस्पोंडेन्ट संख्या-1 नहीं आने पर पटवारी का विश्वास कर लिया। उक्त निर्णय की जानकारी भी अपीलान्ट को तब हुई जब कैवियट के रजिस्टर्ड नोटिस अपीलान्ट को दिनांक 23-5-16 को प्राप्त

हुए। इसके बाद अपीलान्ट ने अदालत मातहत के आदेशिका की नकल लेने पर प्रारम्भिक निर्णय एवं डिक्ली की जानकारी हुई जिस पर अपीलान्ट ने प्रारम्भिक निर्णय एवं डिक्ली एवं अन्तिम निर्णय एवं डिक्ली की अपील अलग अलग भिन्नाद के अंदर पेश की है। अतः अपील अपीलान्ट स्वीकार कर अदालत मातहत का निर्णय एवं डिक्ली निरस्त की जावे।

विद्वान वकील रैस्पोजेन्ट ने बहस में कथन किया कि अदालत मातहत का निर्णय उचित एवं विधिक है। मेरा दावा खाता विभाजन का था। मैंने राजस्व रेकार्ड की नकल जमाबन्दी सं०-2067 से 2070 पेश की है जिसमें झाबर की खातेदारी पतासी रामकोरी सन्तोष पुत्रिया झाबर, हरफूल महावीर, शीशाराम पि० झाबर के नाम दर्ज है। इस राजस्व रेकार्ड के अनुसार मेरा 1/6 हिस्सा है। विद्वान वकील बार बार मेरा 1/24 हिस्सा बता रहे हैं किन्तु यह नहीं बताया कि यह आराजी झाबर के पिता अथवा दादा के नाम रही है। यह आराजी झाबर के पिता अथवा दादा के नाम होती तो उसमें झाबर के समान ही उसके पुत्रों का हिस्सा होता तब रैस्पोजेन्ट सं०-1 को झाबर के 1/4 हिस्से में से सभी वारिसों के हिसाब से हिस्सा प्राप्त होता यहां पर ऐसा कुछ नहीं है। प्रस्तुत प्रकरण में अपीलान्ट ने एक भी शब्द नहीं कहा है कि विवादित आराजी हमारे बाप दादा के नाम रही है। विवादित आराजी झाबर के दादा अथवा पिता की खातेदारी में नहीं है तो रैस्पोजेन्ट को झाबर की खातेदारी की आराजी में 1/6 हिस्सा ही समान रूप से प्राप्त होगा। अदालत मातहत ने सभी तथ्यों पर गौर करने के बाद अपना निर्णय दिया है। इतना ही नहीं अपीलान्ट ने विभाजन प्रस्ताव पर अपनी सहमति के हस्ताक्षर किये हैं तथा अपने तीनों भाईयों की आराजी को एक साथ ही रखे जाने की भी सहमति दी है। जब बंटवारा प्रस्ताव पर सहमति ही दे दी तो आपत्ति लिये जाने की कोई आवश्यकता भी नहीं रह पा जाती है। अपीलान्ट ने अपील के साथ जमाबन्दी सं०-2056 से 2059 पेश की है जिसमें झाबर के फौत होने पर विवादित आराजी मु० अणची बेवा झाबर, हरफूल, महावीर, शीशाराम पि० झाबर के नाम दर्ज है। अपील के साथ ऐसा कोई रेकार्ड पेश नहीं किया है जिससे यह साबित होता हो कि विवादित आराजी





में सन्तोष एवं पतासी ने अपना हिस्सा अपीलान्ट के पक्ष में हक त्याग किया है । यह हक त्याग जब कोई सहखातेदार एक खातेदार के पक्ष में करता है तो वह हिस्सा सभी खातेदारों में समान रूप से समायोजित होगा । कानूनन मुझे विवादित आराजी में 1/4 हिस्सा मिलना चाहिये । किन्तु मेरा कब्जा विभाजन प्रस्ताव में 1/6 हिस्से पर मानकर दिया है जिसे मैंने स्वीकार किया है। किन्तु अपीलान्ट एक औरत जात अनपढ बेवा को हैरान व परेशान करने की नियत से मुकदमें बाजी में उलझा रखा है ।

विद्वान वकील अपीलान्ट ने बहस का जबाब देते हुये कथन किया कि विवादित आराजी पैत्रिक है और अपीलान्ट का हिस्सा उनके पिता के समान 1/4 1/4 पहले से दर्ज है । रेस्पोंडेंट सं०-1 को तो झाबर के हिस्से में 1/4 में से ही 1/6 हिस्सा अर्थात् 1/24 हिस्सा मिलेगा । सम्पूर्ण आराजी में से 1/6 हिस्सा नहीं मिलेगा जैसा आरआरटी 2001 § 2 पेज 1233, आरआरडी 2009 पेज 378, आरआर टी 2011 § 1 पेज 229, 640, डीएनजे एस०सी० 2015 पेज 1088, 2006 डब्लूएलसी § राज० पेज 463, 2006 § 1 डब्लूएलसी § राज० पेज 648 पेश कर अन्तमें कथन किया कि मौका कमिश्नर रिपोर्ट तहसीलदार द्वारा पेश न कर पटवारी डल्का द्वारा ही की गई है । इस कारण श्री अदालत मातहत का आदेश विधि के विरुद्ध है। अपील स्वीकार कर अदालत मातहत का निर्णय निरस्त किया जावे ।

बहस बगौर समाप्त की गई गई । पत्रावली का अवलोकन किया गया । जमाबन्दी सं०- 2067 से 2070 में ख०नं० 408, 409 व 1426/409 कुल किता-3 रकबा 4.99 हैक्टर की खातेदारी पतासी रामकोरी सन्तोष पुत्रिया झाबर हरफूल महावीर शीशाराम पि० झाबर के नाम दर्ज है । जिस पर नामा० सं० 1352 दिनांक 16-11-10 से पतासी व सन्तोष द्वारा हक छ त्याग करने पर इनके बजाय हरफूल, महावीर, शीशाराम पि० झाबर के नाम स्वीकार किया गया । जमाबन्दी सं०- 2056-59 में ख०नं० 408, 409, 670, 1426/409 कुल किता-4 रकबा 5.64 हैक्टर की खातेदारी मु० अण्गी बेवा झाबर हरफूल महावीर शीशाराम पि० झाबर के नाम दर्ज है । राजस्व रेकार्ड के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि विवादित आराजी अपीलान्ट एवं

